प्रेमचन्द की कहानी-कला

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द जी हिन्दी कहानी के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण लेखक माने जाते हैं। इनका जन्म बनारस के लमही गाँव में 1880 ई० को सम्भ्रान्त परिवार में हुआ। पिता अजायबराय डाकखाने में 20 रु मासिक वेतन में कार्यरत थे। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी परिणाम स्वरूप 10वीं तक ही पढ़ाई की। बाद में 18 रु मासिक वेतन में शिक्षक की नौकरी की किन्तु महात्मा गाँधी के बातों से प्रभावित होकर उनके कहने पर सरकारी नौकरी छोड़ दी और आजीवन साहित्य-सेवा करते रहे। इनका बचपन का नाम धनपतराय था। इनकी पहली ~~कहानी~~ 'प्रेमा' उपन्यास काफी प्रसिद्ध हुई। 1904 ई० में इन्होंने कहानी क्षेत्र में पदार्पण किया। उस समय कहानी के क्षेत्र में रवीन्द्रनाथ टैगोर काफी प्रसिद्ध थे। प्रेमचन्द जी ने उनकी कई कहानियों का अनुवाद उर्दू में किया, इसके बाद मौलिक कहानियाँ लिखना आरम्भ किया।

प्रेमचन्द की सबसे पहली कहानी 'संसार का सबसे बड़ा अनमोल रतन' 1907 में 'जमाना' नामक उर्दू पत्रिका में प्रकाशित हुई। इसके बाद उन्होंने कुछ अन्य कहानियाँ लिखी, जिन्हें 1909 ई० में 'सोजे वतन' कहानी संग्रह में प्रकाशित किया। इसमें राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी थी। यह संग्रह सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया। अब तक वे नवाबराय नाम से कहानियाँ लिखते थे, किन्तु इस घटना के बाद वे प्रेमचन्द नाम से लिखने लगे। 1916 तक इन्होंने लगभग 200 उर्दू कहानियाँ लिखी, जो अनेक संग्रह में प्रकाशित हुई।

उर्दू कहानी संग्रह — प्रेम पच्चीसी, प्रेम बतीसी, प्रेम चालीसी, खाके परवाना, दूध की कीमत, फिरदौसे ख्याल, फिरदौस से राह, वारदात, परवाजे ख्याल, ख्वाबो ख्याल और नजात इत्यादि।

1916 ई० से इन्होंने हिन्दी कहानी के क्षेत्र में पदार्पण किया और हिन्दी जगत को 300 कहानियाँ प्रदान की। इनकी आरम्भिक कहानियाँ 'मान-सरोवर' में संग्रहीत हैं। अन्य संग्रह हैं —

2) नवनिधि
3) प्रेम पच्चीसी
4) प्रेम पूर्णिमा
5) प्रेम द्वादशी
6) प्रेम तीर्थ
7) प्रेम पीयूष
8) प्रेम कुंज
10) सप्त सुमन
11) जंगल की कहानी आदि।

~~रसास्वादन मा भी स्थान~~

प्रेमचन्द जी की 300 कहानियां मैं से कुछ प्रमुख कहानियां
है – शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, नमक का दारोगा, आत्माराम,
कफन, बूढ़ी काकी, ईदगाह इत्यादि / ~~प्रेमचन्द~~

प्रेमचन्द जी हिन्दी कहानी में युगान्तकारी लेखकों में
से है। हिन्दी कहानी के क्षेत्र में उनके आविर्भाव के साथ ही नया विषय,
नई शैली और नई शिल्प का आविर्भाव हुआ। उनका कथा साहित्य
इतना विस्तृत है कि उसमें रूप एक युग समाया प्रतीत होता है।

रचनाकालीन परिस्थितियाँ :- प्रेमचन्द जी की रचना-काल की परिस्थितियां
बड़ी विविधतापूर्ण थी। 1917 से लेकर 1936 तक
उन्होंने देश और समाज के बदलते हुए घटनाक्रम
को देखा और उनका समावेश अपनी कहानियों में किया। इन परिस्थितियों
ने एक ओर तो उनके भावपक्ष को प्रेरणा दी और दूसरी ओर उनकी
शिल्प और उद्देश्य को अर्थ और अधिक मर्मस्पर्शी बनाने में सहायता दी।
राजनीतिक दृष्टि से इस युग में एक नवीन-मोड़ आया। बंग-भंग
के फलस्वरूप उत्पन्न राष्ट्रीय चेतना जो इस देश की राजनीति को नया
मोड़ दिया। इसके बाद महात्मा-गाँधी ने देश की राजनीति की बागडोर
को अपने हाथ में लिया। रूस की क्रान्ति, कांग्रेस की आजादी की माँग,
किसानों, मजदूरों, मध्यवर्ग के लोगों का राजनीति क्षेत्र में विचार, जैसी घटनायें
हुई। जीवन के क्षेत्र में भी अनेक परिवर्तन सामने आये। प्राचीन रूढ़ियों का
विरोध, छुआछूत, मद्य आदि का निषेध के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ हुआ।
फिर प्रेमचन्द जी की व्यक्तिगत परिस्थितियाँ भी ऐसी थी कि उनमें ग्रामीण
जीवन की गरीबी, मध्यवर्ग की कठिनाईयाँ, आदि विद्यमान थे; जिसका
चित्रण कहानीकार ने किया। उनकी कहानियों के विषयों और पात्रों सभी में
विविधता है।

वास्तव में प्रेमचन्द जी ने कहानी साहित्य को एक नवीन दिशा
प्रदान की। इसके पूर्व कहानियों कहानियों का मुख्य उद्देश्य था कौतूहल का
संचार करना, चमत्कार सृजन करना, और पाठकों का मनोरंजन करना।
वहीं प्रेमचन्द ने जहां एक ओर परिस्थितियों के निर्वाह का प्रयास किया,
पाठकों के मनोरंजन के साथ-
नवीन आवश्यकताओं की ओर भी ध्यान दिया। जीवन के आदर्श और उद्देश्य का
साथ उन्होंने बिना जाने ही उनके जीवन के आदर्श और उद्देश्य का
आरोपण कर दिया। इस सम्बन्ध में उन्होंने सबसे अधिक कार्य ग्रामीण
जीवन के सन्दर्भ में किया। इस सम्बन्ध में डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी का कहना है-
" प्रेमचन्द जी के अध्ययन से सारे उत्तरी भारत जाना जा सकता है। झोपड़ी
से महलों तक, खोमचे वालों से बैंकों तक, गावों तक, आमीरों से कृषक तक, पंचायतों से धारासभाओं
तक, जीवन के प्रत्येक वर्ग के आचार-विचार, रहन-सहन, व्यवहार का परिचायक

कहानियों का कालक्रम :- प्रेमचन्द जी की कहानियों को तीन काल-क्रम में विभाजित किया गया है - 1) आरम्भिक काल (1917 - 1920 तक)

2) विकास काल (1920 - 1930 तक)

3) उत्कर्ष काल (1930 - 1936 ई० तक)

A आरम्भिक काल :- इसमें सप्त-सरोज के केवल नवनिधि तथा प्रेम पच्चीसी की आरम्भिक कहानियाँ आती हैं। भावपक्ष की दृष्टि से ये सभी कहानियाँ आदर्शवादी हैं। कहानियों का कथानक लम्बा, अनेक पात्रों, घटनाओं का समावेश था। इसमें स्वाभाविकता का अभाव था। शैली वर्णनात्मक थी। कहानी संयोग पर आधारित थी। पंच परमेश्वर, नमक का दारोगा, आदि कहानियों का आरम्भ किसी-न-किसी समस्या के आधार पर हुआ और वह समस्या आगे बढ़ती चली गई। शिल्प विधान की दृष्टि से देखें तो इस काल के कहानी की निम्नलिखित विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं :-

1) कथानक :- इस युग के कथानक लम्बे और समस्यामूलक दृष्टिगत होते हैं। पंच परमेश्वर, नमक का दारोगा, रानी सारंधा।

2) इतिवृत्तात्मकता :- इस युग की कहानियों में प्रेमचन्द जी ने एक कथावाचक के द्वारा घटनाओं और कथानक का निरूपण किया है। कहीं-कहीं पर सहायक कथानकों का भी समावेश हो गया है।

3) पात्र और चरित्र-चित्रण :- इस युग में प्रेमचन्द जी ने स्त्री-पुरुष दोनों पात्रों में उनकी मूर्त और अमूर्त दोनों ही रूपों का अंकन किया है। चरित्र की अपेक्षा आचरण तथा पुरुषों की अपेक्षा स्त्री को अधिक यथार्थवादी एवं सशक्त बताया है। पुरुष पात्र आदर्शवादी अधिक हैं। कहानियों का आरम्भ कथा-वाचक या परिचयात्मक शैली में हुआ है।

4) ~~इस युग~~ कहानी के सभी तत्वों का समावेश :- इस युग की कहानियों में प्रेमचन्द जी के सभी तत्वों का समावेश किया है। कहानी किसी समस्या से आरम्भ होती है, द्वन्द्व एवं घात-प्रतिघात द्वारा आगे बढ़ती हुई कहानी का अंत और उपसंहार होता है। परिस्थिति-चित्रण, नाटकात्मक कथोपकथन, मनोभावों, कार्य-कलापों, और मुद्राओं का अंकन कहानी में हुआ है।

5) उद्देश्य :- इस युग ~~की~~ की कहानियाँ एक निश्चित उद्देश्य अथवा लक्ष्य को ध्यान में रखकर लिखी गई थीं। इसके कारण कहीं-कहीं कहानी की मनोरंजन क्षमता भी कम हो गई है। आदर्श और कर्तव्य-पालन का सुन्दर उदाहरण ये कहानियाँ हमारे सामने प्रस्तुत करती

— ये आगा कह

रसास्वादन पर भी ध्यान दिया गया है। जीवन की व्याख्या एवं विश्लेषण भी है। यथार्थ और आदर्श की सुन्दर गलबाँही इन कहानियों में है। वास्तव में यह युग आदर्शवाद का युग था। गाँधीजी की विचारधारा के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित किया था। प्रेमचन्द जी का साहित्य भी उससे अछूता नहीं रहा। इस युग की शिल्पगत विशेषतायें इस प्रकार हैं-

1) कथानक :- आरम्भिक काल की अपेक्षा इस काल में कहानी छोटे कथानक पर लिखी गई। 'सतरंज के खिलाड़ी' कहानी में कथानक छोटा है। समाजिक कहानियों के कथानक और भी छोटे हो गए। कथा का आरम्भ परिचय से होता है। समस्या-प्रवेश, द्वन्द्व और द्वन्द्व का विकास फिर अवरोह और चरमसीमा तक पहुँचकर कहानी का अन्त होता है। इनमें सहायक कथानक का समावेश नहीं हुआ है, केवल मूलकथा ही होती है। कहानी में मौलिकता एवं नवीनता है।

2) पात्र और चरित्र-चित्रण :- इस काल में पात्रों में अधिक सजीवता एवं सफलता है। पात्रों का चुनाव विविध क्षेत्रों से हुआ है, उनके आचरण की अपेक्षा चरित्र-चित्रण की ओर अधिक ध्यान दिया गया है। मनोविज्ञान का सहारा लेकर पात्रों का चित्रण सजीव और जीवन-संघर्ष में रत दिखाया गया है, जिनसे वे साधारण मनुष्य से प्रतीत होते हैं। पात्रों का परिचय स्वयं देने के बजाय उनके कार्य-कलापों की ओर अधिक मुखर होने दिया है। इससे भी पात्रों में सजीवता आई है।

3) शैली :- शैली की दृष्टि से भी इस युग की कहानियां में नवीनता और विकास के दर्शन होते हैं। शैली की दृष्टि से इस युग की कहानी सर्वथा सफल एवं उत्तम है।

4) कथोपकथन :- इस युग की कहानी में कथोपकथन अधिक स्वभाविक और परिपुष्ट रूप में हमारे सामने आया है। यह सोद्देश्य, स्वभाविक और कहानी के विकास में सर्वथा सहायक है।

5) उद्देश्य कथन :- इस युग की कहानी में आदर्श और यथार्थ का समन्वयात्मक रूप हमें दिखाई पड़ता है। पूर्व की तरह उन्होंने आदर्श पकड़ना नहीं छोड़ा किन्तु साथ-साथ जीवन के यथार्थ को भी सामने लेकर रख दिया। मनोवैज्ञानिक अनुभूति का भी समावेश ... [illegible] ... किया है। इससे कहानियों में और